ऊँ नमः शिवाय शिवायै नमः

**********

'काशी मरणान्मुक्ति' एक अप्रतिम धर्म मीमांसा का स्रोत..... भारतीय धार्मिक तत्व विवेचन ने उत्तरोतर अपने स्वरूपों को भिन्न-भिन्न कालावधियों में विशिष्टता प्रदान किया है| नित नये संदर्भों में प्रासंगिकता-अप्रासंगिकता की विचार धाराओं ने धर्म विवेचना को और संवर्धनता ही प्रदान किया है| इस हेतु अन्यान्य सन्दर्भीत अनेक पुस्तकों का प्रकाशन होता रहा है, परंतु इस पुस्तक('काशी मरणान्मुक्ति') के अनुशीलन ने मुझे यह कहने के लिए प्रेरित किया है कि काशी विश्वनाथ की अनुपम व अनन्य कृपा लेखक पर बनी रही है अन्यथा इस प्रकार की चिंतन साधना विरले ही नज़र आती है| पुस्तक के सन्दर्भ का केंद्र एक चंडाल है जिसे जीव एवं ब्रह्म के एकाकार होने के बीच अनेक शारीरिक, आध्यात्मिक, वैचारिक आदि तत्वादि के विविध गंगा-स्नान करने पड़ते हैं| कबीर के तात्विक विवेचना का मार्ग दर्शन अनेक उपादानों से गुजरता हुआएक चंडाल जीव को भी शिवत्व प्रदान करके यह सिद्ध करना चाहता है कि शिव किसी विशेष हेतु ही नही अपितु प्रत्येक जीव उनके लिए विशेष है| शिवत्व के द्वादश ज्योतिर्लिंग के दर्शन के माध्यम से कही कबीर कहीं शिवा कहीं कृष्ण तो कहीं काशी के भिन्नता को ब्रह्म के समेकित रूप शिव में लीन कर ब्रह्म के एकाकार रूप को प्रदर्शित किया गया| अतः उपरोक्त के अतिरिक्त कई ऐसे तात्विक विवेचन इतनी दक्षता के साथ प्रस्तुत किए गये हैं कि मन ये कहने को विकल हो उठता है कि 'आपको सराहूं की सराहूं निज भाग्य को' | अतःआपके गहरे अध्ययन एवं चिंतन को नमन,माननीय मनोज ठक्कर जी रश्मि छाजेड जी!

*जनमेजय त्रिवेदी*

**********